A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

सिरमौरी लोक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में पच्छाद के प्रसिद्ध लोक कलाकारों का योगदान

Ajay Thakur[1] and Dr. Jeet Ram Sharma[2]

1 Research Scholar, Department of Performing Arts(Music), H.P. University, Summerhill, Shimla.
2 Professor, Department of Performing Arts(Music), H.P. University, Summerhill, Shimla.

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 30 April, 2026

Thakur, A. and Sharma J.R. (2026). sirmauri lok sanskriti ke prachar-prasar mein pachhad ke prasiddh lok kalakaron ka yogdaan. Swar Sindhu, 14(1), 43-47.

सार

सिरमौरी लोक संस्कृति व लोक संगीत अपने आप में व्यापक है। सिरमौर जनपद के अंतर्गत पच्छाद क्षेत्र के लोक कलाकार न केवल सिरमौर बल्कि समूचे हिमाचल व अन्य राज्यों में प्रसिद्ध रहे हैं। सिरमौर जिले का पच्छाद क्षेत्र अपनी भौगोलिकता, समृद्ध लोक संस्कृति एवं स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जाना जाता है। पच्छाद क्षेत्र के लोक कलाकारों का योगदान अतुलनीय है। इस क्षेत्र की लोक संस्कृति के प्रचार-प्रसार तथा संरक्षण-संवर्धन हेतु इन लोक कलाकारों ने अथक प्रयास किए, जिसमें यह काफी हद तक सफल भी हुए। प्रस्तुत शोध पत्र में सिरमौरी लोक कलाकारों के सांगीतिक जीवन एवं कार्यों को प्रस्तुत किया गया है ताकि इनके लोक सांगीतिक योगदान को जीवित रखा जा सके। इस शोध पत्र में पच्छाद क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले प्रमुख लोक कलाकार जिसमें लोक गायक, वादक व नर्तकों के सांगीतिक जीवन व कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

उद्देश्य: सिरमौरी लोक संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण-संवर्धन में पच्छाद क्षेत्र के प्रसिद्ध लोक कलाकारों के लोक सांगीतिक योगदान का अध्ययन करना।

अनुसंधान कार्य क्षेत्र: जिला सिरमौर का पच्छाद क्षेत्र।

अनुसंधान विधि: सर्वेक्षण विधि।

उपकरण: व्यक्तिगत साक्षात्कार।

निष्कर्ष: लोक संगीत में पाश्चात्यीकरण के प्रभाव के कारण लोक संगीत के स्तर में गिरावट। लोक कलाओं को सहेजे हुए कुछ विशेष लोक कलाकारों पर ध्यान न देना अपने आप में समाज व प्रशासन की कमी को दर्शाता है।

बीज शब्द: *लोक कलाकार, सांगीतिक योगदान, पच्छाद, लोक संगीत ।*

भूमिका

लोक कला को किसी भी क्षेत्र की लोक संस्कृति का मापदण्ड कहा जा सकता है। कला की दृष्टि से सिरमौर जिला बहुत समृद्ध है। लोक कला के संदर्भ में जिला सिरमौर में बहुत विविधता है। शायद यही कारण है कि यह सब बातें सिरमौर जनपद को अन्य जिलों से भिन्न करती हैं। यहां के लोक गायकों की आवाज़ में एक अलग सा माधुर्य एवं कर्णप्रियता का समावेश है, यही कारण है की सिरमौर क्षेत्र के लोक कलाकार केवल जिले में सीमित न रहकर बल्कि पूरे राज्य में इतने लोकप्रिय हो गए हैं।

पच्छाद क्षेत्र के लोक कलाकारों का जीवन वृत्तांत एवं सांगीतिक योगदान:

शिक्षा और लोक कला का समन्वय – श्री परस राम 'ग़ालिब'

पच्छाद क्षेत्र के लोक कलाकारों की श्रृंखला में श्री परस राम 'ग़ालिब' जी का नाम अत्यंत गौरव के साथ लिया जाता है। उनका व्यक्तित्व इस बात का प्रमाण है कि लोक संस्कृति को संस्थागत और शैक्षिक रूप से कैसे सुदृढ़ किया जा सकता है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं बाल्यकाल

श्री परस राम जी का जन्म २१ मार्च १९४८ को ग्राम पीड़ग में श्रीमती कोकिला देवी एवं श्री सही राम जी के घर हुआ। माता-पिता की संगीत में अभिरुचि ने उनके भीतर बाल्यकाल से ही कला के बीज बो दिए थे। कुशाग्र बुद्धि के

धनी परस राम जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पीड़ग और राजगढ़ से पूर्ण की, जिसके उपरांत वे लोक संगीत के प्रचार-प्रसार में सक्रिय हो गए।

शिक्षाविद और कला साधक का अनूठा संगम (1967-2006)

वर्ष १९६७ में प्राथमिक शिक्षक के रूप में नियुक्ति के साथ उनके जीवन का एक नया अध्याय शुरू हुआ। वे केवल एक शिक्षक ही नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक दूत भी रहे:

बहुमुखी वादन: दुदम-मतयाना में प्रसिद्ध गायक श्री लेखराम शर्मा जी के सानिध्य में उन्होंने न केवल गायन सीखा, बल्कि हारमोनियम, क्लेरिनेट और बाँसुरी जैसे वाद्यों में भी महारत हासिल की।

आकाशवाणी और मंच: वर्ष १९७१ में आकाशवाणी शिमला से बी-ग्रेड लोक गायक के रूप में चयनित होकर उन्होंने १८ वर्षों तक अपनी आवाज़ से सिरमौर का प्रतिनिधित्व किया। १९७१ से १९७६ तक वे 'पहाड़ी कलाकार संघ, हाब्बन' के एक स्तंभ के रूप में सक्रिय रहे।

'परस राम ग़ालिब': एक सांस्कृतिक उपाधि

मिर्ज़ा ग़ालिब के प्रति उनके अगाध लगाव और उनकी दार्शनिक गायकी के कारण १९७१ में जे.बी.टी प्रधानाचार्य श्री लखनपाल द्वारा उन्हें 'ग़ालिब' की संज्ञा दी गई। यह उपनाम आज उनकी पहचान बन चुका है, जो लोक संगीत में 'साहित्यिक गहराई' का प्रतीक है।

शिक्षण संस्थानों में सांस्कृतिक चेतना का संचार

एक हेडमास्टर और केंद्रीय मुख्य शिक्षक के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने स्कूली बच्चों के भीतर लोक संगीत के प्रति रुचि जाग्रत की। यह आपके शोध का एक अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु है कि कैसे एक कलाकार-शिक्षक आने वाली पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ सकता है।

सेवानिवृत्ति के पश्चात सक्रियता (2010 से वर्तमान)

७७ वर्ष की आयु में भी (वर्ष २०२५), वे 'सरस्वती कला मंच' (श्री सुशील भृगु जी के नेतृत्व में) में मुख्य सलाहकार और मुख्य गायक के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने १५ वर्षों तक श्रीमती रीना रॉय और ढोलक वादक सुंदर सिंह जी के साथ मिलकर मंच साझा किया और आज भी राष्ट्रीय स्तर पर सिरमौरी संस्कृति का ध्वज लहरा रहे हैं।

निष्कर्ष

"श्री परस राम 'ग़ालिब' का जीवन पच्छाद क्षेत्र की उस परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ लोक संगीत, अनुशासन और साहित्य एक साथ मिलकर समाज का मार्गदर्शन करते हैं।"

2. पच्छाद के प्रमुख लोक कलाकार – श्री रमेश कुमार का योगदान

पच्छाद क्षेत्र के लोक कलाकारों की चर्चा तब तक अधूरी है जब तक श्री रमेश कुमार जी जैसे समर्पित साधकों का उल्लेख न किया जाए। उनका जीवन वृत्तांत यह सिद्ध करता है कि लोक कला केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक 'वंश परंपरा' और 'देव-साधना' है।

वंश परंपरा और विरासत

श्री रमेश कुमार जी का जन्म (१० फरवरी १९६२, ग्राम धरोटी) एक ऐसे परिवार में हुआ जहाँ संगीत रक्त में प्रवाहित था। उनके दादा श्री काली राम और पिता श्री पलक राम अपने समय के प्रतिष्ठित वादक थे। लोहार जाति से संबंध रखने वाला यह परिवार पीढ़ियों से 'देव वाद्य परंपरा' (जैसे ढोल, नगाड़ा, जोड़ी) का संरक्षक रहा है। यह आपके शोध के उस बिंदु को पुष्ट करता है जहाँ लोक कला का सीधा संबंध 'देव-संस्कृति' से जुड़ता है।

शास्त्रीय और लोक संगीत का समन्वय

रमेश जी की विशेषता यह रही कि उन्होंने केवल पारंपरिक ज्ञान तक सीमित न रहकर उसे शास्त्रीय आधार भी दिया।

शिक्षा और योग्यता: डॉ. कृष्ण लाल सहगल जी (जो आपके शोध में एक और प्रमुख स्तंभ हैं) के मार्गदर्शन में १९९६ में तबला वादन में 'प्रभाकर' पूर्ण करना और आकाशवाणी शिमला से ढोलक व लोक गायन में ए और बी ग्रेड प्राप्त करना यह दर्शाता है कि एक लोक कलाकार किस प्रकार अकादमिक ऊंचाइयों को छू सकता है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

वाद्य निपुणता: उन्हें चौकड़ी, पछी, सहायक, सिंधी और बल जैसी दुर्लभ 'देउ तालों' का गहन ज्ञान है, जो पच्छाद की लुप्त होती विरासत का हिस्सा हैं।

संगीत निर्देशन और नवाचार: एक संगीतकार और गीतकार के रूप में उन्होंने पच्छाद की लोक धुनों को आधुनिक श्रोताओं तक पहुँचाया।
ऑडियो कैसेट्स का युग: डॉ. कृष्ण लाल सहगल द्वारा निर्मित 'लोक मंजरी', 'लोक रंजनी' और 'संगीतांजलि' जैसी प्रसिद्ध कैसेट्स में उनका वादक के रूप में योगदान पच्छाद के लोक संगीत के दस्तावेजीकरण का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

संगीत निर्देशन: २००७ में 'झूठ किया वायदा' और 'आगाज' जैसी कैसेट्स के माध्यम से उन्होंने लोक संगीत को नए कलेवर में पेश किया।

संस्थागत योगदान: साधना संगीत कला केंद्र व कला मंच शोध का एक महत्वपूर्ण पक्ष कलाकारों द्वारा नई पीढ़ी को तैयार करना है।

क्षमता निर्माण: वर्ष २००४ में 'साधना संगीत कला केंद्र' की स्थापना कर उन्होंने १८ वर्षों तक प्रयाग संगीत समिति के माध्यम से शिष्यों को तैयार किया। यह उनके 'गुरु' होने के प्रमाण को पुष्ट करता है।

साधना कला मंच: वर्ष २००९ में गठित इस दल ने सूचना एवं जनसंपर्क विभाग से 'ए ग्रेड' प्राप्त किया। २०१४ से २०१९ तक जिला स्तरीय प्रतिस्पर्धाओं में निरंतर सफलता प्राप्त कर इस दल ने सिद्ध किया कि पच्छाद की लोक कला प्रतिस्पर्धी और गुणवत्तापूर्ण है।

निष्कर्ष: श्री रमेश कुमार जी का जीवन आर्थिक तंगी और संसाधनों के अभाव के बावजूद संगीत के प्रति अटूट निष्ठा की कहानी है। श्री रमेश धीमान जी एक 'प्रेरणा स्रोत' हैं, जिन्होंने लोक वादन की वंश परंपरा को डिजिटल युग तक सुरक्षित पहुँचाया है।

3. मतियाणा की सांस्कृतिक विरासत और श्री रवींद्र वर्मा का योगदान

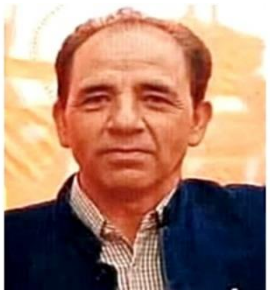

पच्छाद क्षेत्र के अंतर्गत 'मतियाणा' गांव, जिसे 'कलाकारों का गांव' कहा जाता है, ने सिरमौर को कई रत्न दिए हैं। इसी माटी की उपज श्री रवींद्र वर्मा जी का जीवन वृत्तांत लोक कला के प्रति समर्पण और उसे सरकारी व राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने की गाथा है।

ऐतिहासिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि: श्री रवींद्र वर्मा जी का जन्म २३ अक्टूबर १९६४ को श्री मान सिंह वर्मा एवं श्रीमती सुशीला वर्मा जी के घर हुआ। उनकी जड़ें पझौता आंदोलन (हिमाचल का प्रसिद्ध किसान आंदोलन) और स्वतंत्रता सेनानी श्री विद्या सूरत सिंह जी के आशीर्वाद से जुड़ी हैं।

कलाकारों का गांव: उनके दादा और पिता लोक गायक थे, तथा माता जी का नृत्य व गायन के प्रति असीम लगाव था।

महात्मा और लेखराम शर्मा का प्रभाव: दुधम-मतयाणा में शास्त्रीय संगीत की नींव रखने वाले महात्मा और क्षेत्र के सुप्रसिद्ध कलाकार श्री लेखराम शर्मा जी से उन्होंने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की, जिसने उनकी कला को परिपक्व किया।

टाइगर क्लब से दुर्गा सांस्कृतिक मंच तक का सफर
बचपन में 'टाइगर क्लब' नामक ड्रामा पार्टी से प्रेरित होकर, उन्होंने मात्र ७ वर्ष की आयु में शिलांजी मंच से अपनी यात्रा शुरू की।

सांस्कृतिक सक्रियता: वर्ष १९८३ से २००० तक वे 'दुर्गा सांस्कृतिक कला मंच, सैणधार' के मुख्य गायक, कोरियोग्राफर और नर्तक रहे।

आकाशवाणी में उपलब्धि: १९८८ में आकाशवाणी शिमला से 'बी-ग्रेड' और १९९६ में 'बी-हाई' ग्रेड प्राप्त कर उन्होंने अपनी गायकी का लोहा मनवाया।

'ढमाका-92' और लोक संगीत का डिजिटलीकरण
रवींद्र वर्मा जी सिरमौर की पहली ऑडियो कैसेट 'ढमाका-92' के प्रमुख गायकों में से एक रहे। इस ऐतिहासिक कैसेट ने सिरमौरी लोक संगीत के व्यावसायिक प्रसार के द्वार खोले, जिसमें उन्होंने शकुंतला तन्वर और विद्यानंद सैरक जैसे दिग्गजों के साथ स्वर साझा किया।

सरकारी नीतियों का कलात्मक सम्प्रेषण:
डॉ. मेलाराम शर्मा के सहयोग से उन्होंने जनसंपर्क विभाग (P.R.O.) और 'गीत एवं नाटक प्रभाग' (Song & Drama Division) के माध्यम से अपनी कला को सामाजिक सरोकारों से जोड़ा। वर्ष २००३ में उन्हें 'A-ग्रेड' प्राप्त हुआ, जहाँ उन्होंने गायन के साथ-साथ 'अभिनय' (Acting) में भी नए कीर्तिमान स्थापित किए।

लुप्त होती विधाओं का पुनरुद्धार एवं संशोधन

शोध का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि रवींद्र वर्मा जी ने बुजुर्गों से मिली टुलकी, सोईरामा, मरची, हार-वार और पवाड़े जैसी लुप्त होती विधाओं को न केवल सीखा, बल्कि उन्हें आधुनिक रूप में संशोधित कर नया जीवन प्रदान किया। वे वर्तमान में भी 'सरस्वती कला मंच' के माध्यम से इस पूंजी को सहेज रहे हैं।

निष्कर्ष: "श्री रवींद्र वर्मा का कार्य यह सिद्ध करता है कि लोक कला केवल पुरानी धुनों को गाना नहीं है, बल्कि उन्हें समय के अनुरूप परिष्कृत कर समाज को पोषित करना है।"

4.संघर्ष से सफलता तक – श्री परमेश ठाकुर

पच्छाद के सैणधार क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत में श्री परमेश ठाकुर जी का नाम एक ऐसे साधक के रूप में दर्ज है, जिन्होंने शारीरिक अक्षमता को अपनी कला के आड़े नहीं आने दिया। उनका जीवन उन सभी के लिए एक मिसाल है जो विपरीत परिस्थितियों में अपनी पहचान बनाना चाहते हैं।

जन्म एवं प्रारंभिक संघर्ष

श्री परमेश ठाकुर जी का जन्म ८ जुलाई १९७१ को तहसील पच्छाद के ग्राम डींगर (मानगढ़) में हुआ। बाल्यावस्था से ही दृष्टिहीन होने के कारण उन्हें समाज की हीन भावना का सामना करना पड़ा, परंतु उनके माता-पिता (स्वर्गीय श्री बलदेव सिंह एवं स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा देवी) ने उन्हें एक 'राजकुमार' की भांति पाला। ईश्वरीय देन के रूप में उन्हें न केवल एक मधुर कंठ मिला, बल्कि कविता लेखन का हुनर भी उनमें जन्मजात था।

शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा (ग्वालियर घराना परंपरा)

परमेश जी की प्रतिभा को पहचानते हुए उनके बड़े भाई उन्हें सोलन ले गए, जहाँ उन्होंने पंडित नारायण दत्त शर्मा जी (ग्वालियर घराने के पंडित विनायक राव पटवर्धन जी के शिष्य) से शास्त्रीय संगीत की तालीम हासिल की।

असाधारण प्रतिभा:

उन्होंने अपनी कुशाग्र बुद्धि के बल पर प्राचीन कला केंद्र (चंडीगढ़) से संबंधित ३ वर्ष का 'संगीत भूषण' कोर्स मात्र १ वर्ष में पूर्ण कर लिया। स्वास्थ्य कारणों से 'विशारद' की पढ़ाई अधूरी रह गई, परंतु इस तालीम ने उनकी गायकी को एक शास्त्रीय आधार प्रदान किया।

लोक संस्कृति का संरक्षण और प्रसार

शास्त्रीय संगीत की बारीकियों को लेकर जब वे वापस अपने क्षेत्र सैणधार आए, तो उन्होंने लोक संगीत को ही अपना कर्मक्षेत्र बनाया:

सैणधार लोक नृत्य कला मंच: इस दल के माध्यम से उन्होंने घर-घर जाकर सिरमौरी संस्कृति का प्रचार किया।

आकाशवाणी शिमला: अपनी योग्यता के बल पर वे आकाशवाणी के बी-ग्रेड लोक गायक बने।

चूढ़ेश्वर लोक नृत्य सांस्कृतिक मंडल (जालग): वर्ष १९९९ से २००९ तक इस दल के मुख्य गायक के रूप में उन्होंने सिरमौरी लोक संस्कृति को न केवल हिमाचल और भारत, बल्कि विदेशों (International Stage) तक पहुँचाया।

वर्तमान स्थिति एवं योगदान

आज भी वे सैणधार के लोक संगीत एवं संस्कृति के संरक्षण हेतु निरंतर कार्यरत हैं। उनका जीवन यह सिद्ध करता है कि संगीत विरासत में मिले या न मिले, यदि ईश्वरीय देन और कठोर परिश्रम का संगम हो, तो कोई भी बाधा कला को रोक नहीं सकती।

निष्कर्ष: श्री परमेश ठाकुर जी का योगदान यह दर्शाता है कि लोक कलाकार केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि वह समाज की उन रूढ़ियों के विरुद्ध एक 'स्वर' भी है जो शारीरिक अक्षमता को कमजोरी मानती हैं। उनकी गायकी में शास्त्रीय शुद्धता और लोक की मिट्टी की महक का दुर्लभ संगम मिलता है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

उपरोक्त कलाकारों द्वारा दिए गए कुछ सुझाव

- लोक संगीत से संबंधित जितने भी कार्यक्रम हों उन सभी में लोक वेशभूषा को अनिवार्य कर देना चाहिए। ताकि आने वाली पीढ़ी ये समझ सके कि लोक संगीत को कैसे कपड़ों में गाया-बजाया जाना चाहिए।
- सभी सरकारी स्कूलों में कम से कम साल की 5 कार्यशालाएं लोक संगीत के संदर्भ में होनी चाहिए, जिसमें स्थानीय लोक कलाकार लोक संगीत से संबंधित जानकारी छात्र-छात्राओं को दे सकें साथ ही उनके भीतर अपनी संस्कृति के लिए प्रेम पैदा कर सकें।
- स्थानीय मेलों में निजी कलाकारों को मौका मिलना चाहिए ताकि समाज में लोक संगीत बना रहे साथ ही स्थानीय कलाकारों को आजीविका के साथ-साथ अपनी कला को प्रदर्शित करने का मौका भी मिल सके।
- स्थानीय स्कूलों में संगीत अध्यापक/अध्यापिकाएं लोक संगीत विषय पर बच्चों से चर्चा करें और स्थानीय कलाकारों से रूबरू करवाएं।

निष्कर्ष

पश्चिमीकरण का प्रभाव हमारे लोक समाज में दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है, जिसके कारण हम सभी अपनी लोक संस्कृति, लोक परंपराओं व मौलिकताओं को भूलते जा रहे हैं। हमारे युवा अपनी लोक संस्कृति को लेकर गंभीर नहीं हैं। ऐसे महान लोक कलाकार जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन सिरमौरी लोक संगीत को जन-जन तक पहुंचाने में लगा दिया। उन महान कलाकारों को समाज के सामने लाना अत्यंत आवश्यक हो गया है ताकि सभी यह जान सके कि हमारी लोक संस्कृति व संगीत का मूल रूप क्या था व आज क्या बना दिया गया है साथ ही इस लोक संगीत के प्रचार-प्रसार में किसका योगदान रहा है। कुछ युवा आज ख़ुद को लोक कलाकार कहते हैं मगर उन्हें लोक शब्द की परिभाषा भी मालूम नहीं। आज के युवा मंच पर पश्चिमी कपड़े पहन कर लोक कला का प्रदर्शन करते हैं। जिसमें अधिकतर गीत बेतुकी बातों के होते हैं, जिन्हें हम लोकगीत नहीं कह सकते। वह केवल एक पहाड़ी भाषा में स्वरबद्ध अर्थहीन बातें हैं। ऐसे विषयों को प्रोत्साहन देना अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है। समाज व प्रशासन को ऐसे गंभीर विषयों पर ध्यान देने की परम आवश्यकता है। उपरोक्त वह कलाकार हैं जिन्होंने लोक समाज में लोक कलाओं को बचा कर रखा साथ ही उनकी गरिमा को भी बनाकर रखा। इन सभी का सांगीतिक योगदान अपने आप में युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा है। यह वो कलाकार हैं जो हमारे समाज की लोक संस्कृति को अपनी कला में सहजे हुए हैं और इसका पुरजोर्ता से संरक्षण-संवर्धन कर रहे हैं।

सन्दर्भ

साक्षात्कार सूची

श्री परस राम ग़ालिब, ग्राम चुरुवाधार, तहसील राजगढ़, जिला सिरमौर, ही. प्र.।
श्री रमेश धीमान, ग्राम धरोटी, तहसील राजगढ़, जिला सिरमौर, हि. प्र.।
श्री रविंदर वर्मा, ग्राम धनेच, डा. राजगढ़, तहसील राजगढ़, जिला सिरमौर, हि.प्र.।
श्री परमेश ठाकुर, ग्राम डिंगर, डा. मानगढ़, तहसील पच्छाद, जिला सिरमौर, हि.प्र.।